

अष्टमः पाठः
परोपकारः
चतुर्थी विभक्तिः

परेषाम् उपकारः परोपकारः। सूर्यः लोकहिताय तपति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। वृक्षाः



परोपकाराय फलानि यच्छन्ति। मेघाः परोपकाराय जलं वर्षन्ति। वसुधा परोपकाराय भारं वहति। एवं प्रकृतिः परोपकाराय प्रेरयति। प्रकृत्यै वयं किं कुर्मः?

किं यूयं किञ्चित् स्मरथ यत् एषा प्रकृतिः अस्मभ्यम् अहर्निशं सर्वं सुखं ददाति। यदा प्रकृत्याः सुरक्षायै वयं मानवाः किञ्चिदपि कर्तुं शक्नुमः, तदा अस्माकं जीवनं सुखकरं भविष्यति। एतदर्थं जलसंरक्षणं, वायुसंरक्षणं, भूसंरक्षणम् च अवश्यमेव करणीयम्।

माता सर्वेभ्यः भोजनं पचति। भोजनं स्वास्थ्यलाभाय भवति। स्वास्थ्यं ज्ञानाय परिश्रिमाय च भवति। परिवारे पिता पुत्राय विद्याधनं ददाति।

माता स्वपुत्रै सुसंस्कारं यच्छति।

सैनिकः देशसुरक्षायै स्वशरीरस्य बलिदानं करोति। जनसेवकः समाजविकासाय सततं कार्यं करोति। परिश्रमः धनार्जनाय भवति। धनं राष्ट्रविकासाय, धर्माय, सुखाय च भवति। अतः परोपकारस्य विषये कथितम् -

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

शब्दार्थः

वहन्ति	=	बहती हैं।	दुहन्ति	=	दूध देती हैं।
फलन्ति	=	फल देते हैं।	वर्षन्ति	=	बरसते हैं।
पचति	=	पकाती है।	सततम्	=	निरन्तर
मेघाः	=	बादल	यच्छति	=	देती है, देता है
विनीतम्	=	विनम्र	धर्माय	=	धर्म के लिए

धनार्जनाय = धन कमाने के लिए प्रकृत्याः = प्रकृति की
प्रकृत्यै = प्रकृति के लिए
अभ्यासः

१. एकपदेन उत्तरं लिखत -

- | | |
|-----------------------|--------------------------|
| यथा- का भू भारं वहति? | वसुधा। |
| (क) के जलं वर्षन्ति? | (ख) कः देशरक्षां करोति? |
| (ग) का भोजनं पचति? | (घ) कः विद्याधनं यच्छति? |

२. एकवाक्येन उत्तरं लिखत -

- | |
|--------------------------------------|
| (क) सर्वेभ्यः सुखकरं जीवनं कदा भवति? |
| (ख) धनं किमर्थं भवति? |
| (ग) माता स्वपुत्रै किं यच्छति? |
| (घ) परोपकाराय के फलानि यच्छन्ति? |

३. उचितपरिवर्तनेन पूरयत -

- | | | | | |
|-------------------|----------|----------------|---|-------|
| (अ) यथा- पुत्रः - | पुत्राय | (इ) यथा-सुखं | - | सुखाय |
| (क) परोपकारः | - | (क) धनं | - | |
| (ख) जनकः | - | (ख) ज्ञानं | - | |
| (ग) लाभः | - | (ग) फलं | - | |
| (घ) विकासः | - | (घ) पुस्तकं | - | |
| (ङ) परिश्रमः | - | (ङ) स्वास्थ्यं | - | |
| (आ) यथा-बालिका- | बालिकायै | (ई) यथा- नदी | - | नदौ |
| (क) महिला | - | (क) जननी | - | |
| (ख) सरला | - | (ख) सखी | - | |
| (ग) लता | - | (ग) पुत्री | - | |
| (घ) सुरक्षा | - | (घ) शालिनी | - | |
| (ङ) वसुधा | - | (ङ) नलिनी | - | |

४. बहुवचने परिवर्तयत -

- | | | |
|-------------|---|---------------|
| यथा- बालकाय | - | बालकेभ्यः |
| (क) पुत्राय | | (ख) विकासाय |
| | | (ग) परिश्रमाय |

५. उचितपदेन रिक्तस्थानं पूरयत -

- (क) मोहनः भोजनं ददाति। (भिक्षुकं/भिक्षुकाय)
- (ख) धनं भवति। (परोपकारेण/परोपकाराय)
- (घ) शास्त्रं अस्ति। (पण्डिताः/पण्डिताय)
- (ड) भोजनं भवति। (स्वास्थ्यस्य/स्वास्थ्याय)
- (च) महिला धनं ददाति। (निर्धने/निर्धनाय)

६. रेखाङ्कितशब्दान् आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(केभ्यः, कुत्र, का, कानि)

- | | | |
|--------------------------------------|---------|---------------------------------------|
| यथा-मेघाः जलं यच्छन्ति। | प्रश्न- | मेघाः किं यच्छन्ति? |
| (क) सूर्यः <u>आकाशे</u> तपति। | (ख) | माता <u>सर्वेभ्यः</u> भोजनं पचति। |
| (ग) वृक्षेभ्यः <u>फलानि</u> जायन्ते। | (घ) | <u>प्रकृतिः</u> सर्वेभ्यः सुखं ददाति। |

योग्यताविस्तारः -

- ‘षष्ठी’ विभक्त्या सह ‘कृते’ शब्दस्य योगेन अपि चतुर्थी विभक्तिकार्यं भवति।

यथा- रामस्य कृते	-	रामाय
बालिकायाः कृते	-	बालिकायै
वनस्य कृते	-	वनाय
छात्राणां कृते	-	छात्रेभ्यः
महिलानां कृते	-	महिलाभ्यः
- श्लोकेभ्यः ‘चतुर्थी’ विभक्तिशब्दान् चिनुत -
 - (क) नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माहरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥
 - (ख) नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
 - (ग) मन्दारमाला कुलितालकायै कपालमाला-शशिशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥